❍ 08 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अपना समय व्यर्थ तो नहीं गंवाया ?*

➢➢ *कर्मेन्द्रियो से कोई विकर्म तो नहीं किया ?*

➢➢ *सर्व शक्तियों रुपी बिर्थ राईट को हर समय कार्य में लगाया ?*

➢➢ *उमंग और उत्सास से महान कार्य किये ?*

────────────────────────

✧ ☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂

〰✧ *आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष तना हो। तना से सबको सकाश पहुँचती है। तो कमजोरों को बल दो।* अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। *अभी ऐसी लहर फैलाओ-देना है, देना है, देना ही देना है। देने में लेना समाया हुआ है।*

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦

⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦ ••☆••⟡˚ ◦

✺ *" मैं होली हँस हूँ"*

〰✧ सदा अपने को होली हंस समझते हो? होली हंस का कर्तव्य क्या है? *व्यर्थ और समर्थ को परखना। वो तो कंकड़ और रत्न को अलग करता लेकिन आप होली हंस समर्थ को धारण करते हो, व्यर्थ को समाप्त करते हो। तो समर्थ और व्यर्थ, इसको परखना और परिवर्तन करना-यह है होली हंस का कर्तव्य।*

〰✧ सारे दिन में व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म और व्यर्थ सम्बन्ध-सम्पर्क जो भी होता है, उस व्यर्थ को समाप्त करना-यह है होली हंस। कोई कितना भी व्यर्थ बोले लेकिन आप व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। *व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा। एक व्यर्थ बोल भी स्पर्श हो गया तो वह अनेक व्यर्थ का अनुभव करायेगा, जिसको आप लोग कहते हो-फीलिंग आ गई।*

〰✧ एक व्यर्थ संकल्प की फीलिंग आई तो वह फीलिंग को बढ़ायेगी। इसीलिए व्यर्थ की पैदाइस बहुत फास्ट होती है-चाहे कर्म हो, चाहे क्या भी हो। एक व्यर्थ बोल बोलेंगे तो उसे सिद्ध करने के लिए कितने व्यर्थ बोल बोलने पड़ेंगे! जैसे लोग कहते हैं ना-एक झूठ को सिद्ध करने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ते हैं! तो *व्यर्थ का खाता समाप्त हो जाये और सदा समर्थ का खाता जमा होता रहे। वो व्यर्थ आपको दे लेकिन आप परिवर्तन कर समर्थ धारण

करो। इतनी तीव्र परिवर्तन-शक्ति चाहिए।*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *संस्कार का स्वरूप क्या होगा?किसी के पास कर्मभोग के रूप में आयेंगे, किसी के पास कर्म सम्बन्ध के बन्धन के रूप में आयेंगे। किसी के पास व्यर्थ संकल्प के रूप में आयेंगे। किसी के पास विशेष अलबेलेपन और आलस्य के रूप में आयेंगे।* ऐसे चारों ओर का हलचल का वातावरण होगा।

〰✧ राज्यसत्ता, धर्मसत्ता, विज्ञानसता और अनेक प्रकार के बाहुबल सब अपनी सताओं की हलचल में होंगे। ऐसे *समय पर फुलस्टॉप लगाना आयेगा या क्वेचन मार्क सामने आयेगा?* क्या होगा? इतनी समेटने की शक्ति अनुभव करते हो।

〰✧ *देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। प्रकृति की हलचल देख प्रकृतिपति बन प्रकृति को शान्त करो।* अपने फुलस्टॉप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टॉप करो। तमोगुणी से सतीगुणी स्टेज में परिवर्तन करो। ऐसा अभ्यास है? ऐसे समय का आह्वान कर रहे हो ना?

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अवतार अर्थात् ऊपर से आने वाली आत्मा। *मूलवतन की स्थिति में स्थित हो ऊपर से नीचे आओ।* नीचे से ऊपर नहीं जाओ। है ही परमधाम निवासी आत्मा, सतोप्रधान आत्मा। *अपने आदि-अनादि स्वरूप की स्मृति में रहो फिर क्या हो जायेगा? स्वंय भी निर्बन्धन और जिन्हों की सेवा के निमित्त बने हो वह भी निर्बन्धन हो जायेंगे।* जैसे साकार बाप को देखा, क्या याद रहा? बाप के साथ मैं भी कर्मातीत स्थिति में हूँ या देवताई बचपन रूप में। अनादि आदि रूप सदा स्मृति में रहा तो फ़ालो फ़ादर।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✷ *"ड्रिल :- अपना अमूल्य समय बर्बाद न कर, बाप की याद से आबाद होना"*

➳ _ ➳ अपने महान भाग्य को याद करते हुए... मै आत्मा अपने खुबसूरत ब्राह्मण स्वरूप को निहारती हूँ... कैसे मै आत्मा साधारण मनुष्य से ब्राह्मण दुलारा बन गयी हूँ... फिर दूसरी और अपना ही देवताई स्वरूप देख मन्त्रमुग्ध हूँ... दोनों रूपो को निहारते हुए... शिव पिता की बलिहारी हूँ... *यूँ अपने महान कायाकल्प और मीठे बाबा की याद आते ही..*. फ़रिश्ते रूप को धारण कर अपने मीठे वतन में पहुंचती हूँ... मीठे वतन में शिव पिता की किरणों तले बैठ असीम सुख पाती जा रही हूँ...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को संगम पर महानता से सजाते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... जब तक भगवान को नही जाना तब तक समय के मूल्य से भी अनजान रहे... अब ईश्वर पिता के साथ के बहमूल्य पलों में सदा के आबाद हो जाओ... किसी भी व्यर्थ में नही उलझो न ही उलझाओ... और *यादो की माला में पिरो कर सुखो के सरताज बन जाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत को दिल में समाकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... आपने जीवन को कितना कीमती और अमूल्य बना दिया है... अपनी मीठी यादो में डुबोकर मुझे अनोखा बना दिया है... *संकल्पों और याद का जादू सिखाकर मुझे बेशकीमती बना दिया है.*.."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को सच्चे सुखो का राज समझाते हुए कहते है :-* "मीठे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता के मिलन की घड़ी में समय की भी महत्वपूर्ण भूमिका है... इसलिए इस संगम के समय को व्यर्थ में न गंवाओ... *यादो में रहकर इन लम्हों को सुखो की मणियो सा सजा लो*... मीठे बाबा को हर साँस, हर पल याद करके... सच्चे सुखो के अधिकारी बन जाओ..."

➳ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा को पाकर. अनोखे बने अपने जीवन पर.

मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... भक्ति में आपको कहाँ कहाँ नही ढूंढा... पर कभी पा न सकी... आपने जब आवाज दी तो मेने सम्मुख भगवान को पाया... इस मीठे भाग्य की महिमा कैसे करूँ... *बलिहारी इस अमूल्य समय की है जिसने मीठा बाबा दिलाकर मुझे सनाथ बना दिया है.*.."

❈ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को देवताई सुखो का मालिक बनाते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... *ईश्वरीय साथ भरे, इन कीमती पलों में सच्चे सुखो की बुनियाद बनाओ*... मीठे बाबा की यादो में इस कदर खो जाओ कि व्यर्थ के समय ही शेष न रहे... हर साँस मीठे बाबा की यादो में आबाद होकर, सुखो का पर्याय बन जाये...

➽ _ ➽ *मै आत्मा मीठे बाबा से जीवन जीने की बारीकियां सीखकर कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा... आप के बिना तो जीवन ही व्यर्थ से सा था... लक्ष्यहीन और विकारो से भरा हुआ था... आपने आकर मुझे देवताई सुंदरता से सजाया है... *अपनी फूलो सी गोद में बिठाकर, मुझे अपनी मीठी प्यारी यादो में महकाया है..*. और खुशियो से आबाद किया है..." अपने बाबा का दिल की गहराइयो से शुक्रिया कर... मै आत्मा सृस्टि जगत में लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ऊंच पद पाने के लिए अपनी पढ़ाई में तत्पर रहना है*"

➽ _ ➽ जिस भगवान के दर्शन मात्र के लिए दुनिया प्यासी है वो भगवान शिक्षक बन मुझे पढ़ाने के लिए अपना धाम छोड़ कर आते हैं, यह ख्याल मन मे आते ही एक रूहानी नशे से मैं आत्मा भरपूर हो जाती हूँ और खो जाती हूँ उस परम शिक्षक अपने प्यारे परमपिता परमात्मा शिव बाबा की याद में। *उनकी मीठी सुखदायी याद मुझे असीम आनन्द से भरपूर करने लगती है। और

ऐसा अनुभव होता है जैसे मेरे परम शिक्षक, मीठे शिव बाबा का प्यार उनकी अनंत शक्तियों की किरणों के रूप में परमधाम से सीधा मुझ आत्मा पर बरसने लगा है*।

➾ _ ➾ इसी गहन आनन्द की अनुभूति में समाई हुई मैं आत्मा अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो कर, *अपने मोस्ट बिलवेड परम शिक्षक शिव बाबा की छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करते हुए घर से चल पड़ती हूँ उस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर जहां मेरे परम शिक्षक, मेरे मीठे शिव बाबा हर रोज मुझे ऐसी अविनाशी पढ़ाई पढ़ाने आते हैं जिसे पढ़ कर मैं भविष्य विश्व महारानी बनूँगी*। यह विचार मन मे आते ही एक दिव्य आलौकिक नशे से मैं भरपूर हो जाती हूँ और अपने परम शिक्षक की याद में तेज तेज़ कदमों से चलते हुए मैं पहुंच जाती हूँ अपने ईश्वरीय विश्वविद्यालय में और क्लासरूम में जा कर अपने परमप्रिय मीठे शिव बाबा की याद में बैठ जाती हूँ।

➾ _ ➾ मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूं कैसे शिव बाबा परमधाम से नीचे सूक्ष्म वतन में पहुंच कर अपने रथ पर विराजमान हो कर नीचे आ रहे हैं और आ कर सामने संदली पर बैठ गए हैं। *बापदादा के आते ही उनके शक्तिशाली वायब्रेशन पूरे क्लास रूम में फैलने लगें हैं*। ऐसा लग रहा है जैसे क्लासरूम में एक अलौकिक दिव्य रूहानी मस्ती छा गई है। एक दिव्य आलौकिक वायुमण्डल बन गया है। अपने परम शिक्षक बापदादा की उपस्थिति को क्लास रूम में बैठी हुई सभी ब्राह्मण आत्मायें स्पष्ट महसूस कर रही हूं। *बापदादा से लाइट माइट पा कर ब्राह्मण स्वरूप में स्थित सभी गॉडली स्टूडेंट्स भी जैसे अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो गए हैं*।

➾ _ ➾ मीठे बच्चे कहकर सभी ब्राह्मण बच्चो को सम्बोधित करते हुए शिव बाबा ब्रह्मा मुख से अब मीठे मधुर महावाक्य उच्चारण कर रहें हैं और साथ साथ सभी को अपनी मीठी दृष्टि से निहाल भी कर रहें हैं। *सभी गॉडली स्टूडेंट ब्राह्मण बच्चे आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर, बाबा की शक्तिशाली दृष्टि से स्वयं को भरपूर करने के साथ साथ बाबा के मधुर महावाक्यों को भी बड़े प्रेम से सुन रहे हैं*। सब अपलक बाबा को निहार रहे हैं। बाबा सभी बच्चों को पढाई पर विशेष अटेंशन खिंचवाते हुए समझा रहे हैं कि ऊंच पद पाने के

लिए पढ़ाई में सदा तत्पर रहना और एक दो को ज्ञान सुना कर उनका भी कल्याण करना।

➳ _ ➳ मैं मन ही मन "जी बाबा" कहते हुए बाबा के इस डायरेक्शन को अमल में लाने का दृढ़ संकल्प करती हुई विचार करती हूं कि *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं, जिसे स्वयं भगवान से पढ़ने का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त हुआ*। पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ने और एक दो को ज्ञान सुना कर उनका कल्याण करने का होमवर्क दे कर बाबा अपने धाम लौट जाते हैं। बाबा द्वारा मिले इस होमवर्क को पूरा करने के लिए मैं पूरी तन्मयता से अपनी ईश्वरीय पढ़ाई में लग जाती हूँ। *ज्ञान रत्न धारण कर, ज्ञान की शंख ध्वनि द्वारा औरों का कल्याण करने हेतू अब मैं ईश्वरीय विश्वविद्यालय से बाहर आ जाती हूँ*।

➳ _ ➳ चलते चलते रास्ते मे मिलने वाली आत्माओं को अब मैं सत्य ज्ञान सुनाती हुई, *उन्हें परमात्मा का यथार्थ परिचय दे कर परमात्मा से मिलने का रास्ता बताती हुई अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आती हूँ और कर्मयोगी बन अपने कर्म में लग जाती हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव महान कार्य करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सभी का उमंग उत्साह सहित सहयोग प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं महान आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं सर्व शक्तियों रूपी बर्थ राइट को हर समय कार्य मे लगाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

────────────────────────

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *कुमारी वा सेवाधारी के बजाय अपने को शक्ति स्वरूप समझो:- सदा अपना शिव-शक्ति स्वरूप स्मृति में रहता है? शक्ति स्वरूप समझने से सेवा में भी सदा शक्तिशाली आत्माओं की वृद्धि होती रहेगी। जैसी धरनी होती है वैसा फल निकलता है। तो जितनी अपनी स्वयं की शक्तिशाली स्टेज बनाते, वायुमण्डल को शक्ति स्वरूप बनाते उतना आत्मायें भी ऐसी आती हैं।* नहीं तो कमजोर आत्मायें आयेंगी और उनके पीछे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। तो सदा अपना 'शिव-शक्ति स्वरूप' 'स्मृति भव'। कुमारी नहीं, सेवाधारी नहीं - 'शिव शक्ति'। सेवाधारी तो बहुत हैं, यह टाइटल तो आजकल बहुतों को मिल जाता है लेकिन आपकी विशेषता है - 'शिव शक्ति कम्बाइन्ड'। इसी विशेषता को याद रखो। सेवा की वृद्धि में सहज और श्रेष्ठ अनुभव होता रहेगा। सेवा करने के लिफ्ट की गिफ्ट जो मिली है उसका रिटर्न देना है। रिटर्न क्या है? शक्तिशाली - सफलता मूर्त।

✺ *"ड्रिल :- सदा अपना शिव शक्ति स्वरुप स्मृति में रहना*"

➾ _ ➾ मैं आत्मा अपना फ़रिश्ता स्वरुप में बापदादा के साथ पूरे ब्रह्माण्ड में घूम रही हूँ... घूमते घूमते हम एक प्रदेश में पहुँच जाते हैं *जहाँ हरियाली ही हरियाली हैं... चारो और प्रकृति का असीम सौंदर्य हैं... धरती नीली रंग की चुंदरी ओढ़े मिट्टी की भीनी भीनी खुशबू फैला रही हैं... खुशबूदार रंग बिरंगी फूलों की खुशबू का साम्राज्य छाया हुआ हैं...* और मैं आत्मा यह असीम सुखद नजारा देख कर हर्षित हो रही हूँ... सभी आत्मायें अपने-अपने लौकिक पार्ट को सुखरूप होकर निभा रहे थे...

➾ _ ➾ बापदादा मेरा हाथ पकड़कर ले चलते हैं एक ऐसी जगह पर जहाँ मेरा मन बहुत ही विचलित हो जाता हैं... *बंजर जमीन... न मिट्टी की भीनी भीनी खुशबू न खुश्बूदार हवा का झोंका हैं... मानों बच्चे से बिछुड़ी हुई माँ बैठी हैं अपने बच्चे के इंतजार में... जैसे बारिश की इंतजार में बैठी हैं बंजर जमीन...* और यह नजारा देखकर मन ही मन बाबा को पूछ रही हूँ बाबा यह सब क्या हैं और क्यूँ ऐसा हो रहा हैं... क्या यह भूमि का दोष हैं कि आत्माओं की शक्तियां क्षीण होती जा रही हैं...

➾ _ ➾ बापदादा मेरी मनोस्थिति को जान कर मुझ आत्मा को अपने पास बिठाकर मुझ आत्मा को एक सीन दिखा रहा है... *एक खेत में बैठे सभी आत्मायें बापदादा का आह्वान कर रहे हैं...* खेत में अच्छी फसल हो जाये... खेत धन धान्य से भरपूर हो जाये... जमीन अखूट खजानों का भंडार बन जाये... बंजर जमीन से हीरे मोती तुल्य अनाज की हरियाली छा जाये... और *मैं आत्मा देख रही हूँ कि बापदादा स्वयं इस खेत में खड़े हैं और पूरी धरती को प्यार से दृष्टि दे रहे हैं... और बंजर खेत को अपने रूहानी हाथों से प्यार से नहला रहे हैं...*

➾ _ ➾ और *देखते ही देखते बंजर खेत हीरे मोती तुल्य धन धान्य से भरपूर हो गया...* हरियाली ही हरियाली छा गयीं ... बंजर खेत फलद्रुप हो गया और सभी आत्मायें बापदादा का शुक्रिया कर रही हैं... और उनको देख के दूसरे खेत में भी सभी आत्मायें बापदादा का आह्वान करने लग गये हैं... धीरे धीरे परे बंजर प्रदेश में *बापदादा की शक्तियों रूपी बारिश की वर्षा से बंजर प्रदेश

को फलद्रुप बनता देख... सभी खेत में बापदादा का झंडा लहराता देख* मैं आत्मा ख़ुशी से झूम उठती हूँ... *बापदादा के सुनहरे बोल "अपने चहरे और चलन से बापदादा को प्रत्यक्ष करो... शक्ति स्वरुप हो... शक्तियों की वर्षा करो..."*

➳ _ ➳ मैं आत्मा यह सुनहरे बोल को अपने दिल में सुवर्ण अक्षरों में अंकित करके... सर्व शक्तियों को अपने में धारण कर... शक्ति स्वरूपा बन हर सेवा को बापदादा की श्रीमत पर परिपूर्ण करती जा रही हूँ... *जैसी धरनी वैसा फल यह स्लोगन को यथार्थ रीति जान अपने आप की सभी कमी कमजोरियों को... विकारों को योग अग्नि में स्वाहा करती जा रही हूँ... अपने शक्ति स्वरुप से शक्तियों की वर्षा बापदादा के संग करती जा रही हूँ...* पूरे वायुमंडल को शक्तिस्वरूप बनाती जा रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔